पाठ 1 बड़े भाई साहब

प्रेमचंद

प्रश्न :- 1 कथा नायक की रूचि किन कार्यों में थी ?

उत्तर :- कथा नायक की रूचि खेल कूद, कँकरियाँ उछालने, कागज़ की तितलियाँ बनाने, उड़ाने, उछलकूद करने, चार दीवारी पर चढ़कर नीचे कूदने, फाटक पर सवार होकर उसे मोटर कार बना कर मस्ती करने कनकौवे उड़ने में थी |

प्रश्न : 2 छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया ?

उत्तर :- छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई के लिए टाइम-टेबिल बनाते समय उसने सोचा कि अब वह मन लगाकर पड़ेंगे और वे खेलने कूदने नहीं जायेंगे । रात ग्यारह बजे तक हर विषय का कार्यक्रम बनाया गया परन्तु पढ़ाई करते समय खेल के मैदान, उसकी हरियाली , हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबॉल की उछलकूद, कबड्डी बालीबॉल की तेज़ी सब चीजें उन्हें अपनी ओर खींचती और वे टाइम टेबल का पालन नहीं कर पाते थे ।

प्रश्न :- 3 एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटे भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर :- एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटे भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचे तो बड़े भाई ने छोटे भाई को बहुत डाँटा। उन्होंने उसे पढ़ाई पर ध्यान देने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि अव्वल आने पर उन्हें घंमड हो गया है। उनके अनुसार घमंड तो रावण जैसे चक्रवर्ती राजा तक का भी नहीं रहा तो तुमने तो महज एक कक्षा ही पास किया है। अतः छोटे भाई को चाहिए कि घमंड छोड़कर पढ़ाई की ओर ध्यान दे।

प्रश्न :- 4 बड़े भाई को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं ?

उत्तर :- बड़े भाई होस्टल में छोटे भाई के अभिभावक के रूप में थे। वे छोटे भाई के समक्ष आदर्श भाई का मिशाल कायम रखने ले लिए अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखते थे। उन्हें भी खेलने पंतग उड़ाने तमाशे देखने का शौक था परन्तु अगर वे ठीक रास्ते पर न चलते तो भाई के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी कैसे निभाते। अपने नैतिक कर्त्तव्य का बोध करके वे अनुशासित रहते इन्हीं कारणों से बड़े भाई को अपने मन की इच्छाएं दबानी पड़ती थी |

प्रश्न :- 5 बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों ?

उत्तर :- बड़े भाई साहब छोटे भाई को पढ़ाई करने तथा घमंड न करने की सलाह देते थे | क्योंकि बड़े भाई का मानना था कि जिसने भी घमंड किया वह दीन दुनिया दोनों से गया | वे रावण , शैतान व शाहेरूम का उदाहरण देकर समझाते हैं कि उन्हें घमंड नहीं करना चाहिए |

प्रश्न :- 6 छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फ़ायदा उठाया ?

उत्तर :- छोटे भाई बड़े भाई की नरमी का अनुचित लाभ उठाने लगे । अब वे स्वच्छंदी हो गए थे तथा उनका आत्म-सम्मान भी बढ़ गया । बड़े भाई का रौब नहीं रहा इसलिए उन्होंने पढ़ना लिखना बंद कर दिया , उन्हें विश्वास हो गया कि उनकी तकदीर बलवान है | वे पढ़े चाहे न पढ़े ,पास हो जाएंगे । वे आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगे | अब सारा समय वे पतंगबाजी में व्यतीत करने लगे |

प्रश्न :- 7 बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर :- बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो छोटा भाई कभी कक्षा में अव्वल नहीं आते | यदि बड़े भाई साहब उन्हें डाँटते- फटकारते नहीं तो वे जितना पढ़ते थे , उतना भी नहीं पढ़ पाते और अपना समय खेलकूद में ही गँवा देते | कक्षा में पास होना है तो पुस्तकें पढ़नी पड़ेंगी | कुशाग्र बुद्धि का होने के कारण वे जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करते थे उन्हें बड़े भाई की डाँट फटकार का डर था। इसी कारण वह थोड़ा बहुत पढ़ लिया करते थे |

प्रश्न :- 8 बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है ? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं ?

उत्तर :- बड़े भाई साहब ने समूची शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि ये शिक्षा अंग्रेजी बोलने, लिखने, पढ़ने पर ज़ोर देती है । आए या न आए पर उस पर बल दिया जाता है । विषय की अधिकता व विस्तार होने के कारण बच्चों को याद करने में कठिनाई होती है | बच्चों का आकलन उसकी लेखन क्षमता के आधार पर किया जाता है | इसलिए रटंत विद्या पर जोर दिया जाता है | अर्थ समझ में आए न आए पर रटकर बच्चा विषय में पास हो जाता है । साथ ही अलजबरा, ज्योमेट्री जैसे विषय बड़े भाई को निरर्थक प्रतीत होते हैं उनके अनुसार जीवन में उसकी कोई उपयोगिता नहीं है । अपने देश के इतिहास के साथ दूसरे देश के इतिहास को भी पढ़ना पड़ता है जो ज़रूरी नहीं है। समय की उपयोगिता पर लम्बे चौड़े निबंध लिखना समय की बरबादी नहीं तो और क्या है ? ऐसी शिक्षा जो लाभदायक कम और बोझ ज़्यादा हो ठीक नहीं होती है ।

प्रश्न :- 9 बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उत्तर :- बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती बल्कि अनुभव से आती है । इसके लिए उन्होंने अम्माँ, दादा व हैडमास्टर की माँ के उदाहरण भी दिए हैं कि वे पढ़े लिखे न होने पर भी हर समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेते हैं। अनुभवी व्यक्ति को जीवन की समझ होती है, वे हर परिस्थिति में अपने को ढालने की क्षमता रखते हैं।

प्रश्न :- 10 छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर :- एक दिन पतंग उड़ाते समय बड़े भाई साहब ने उन्हें पकड़ लिया । उन्होंने छोटे भाई को समझाया की किस प्रकार पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान महत्वपूर्ण है | उन्होंने बताया कि कैसे वे उनके भविष्य के कारण अपने बचपन का गला घोंट रहे हैं । उनकी बातें सुनकर छोटे भाई की आँखें खुल गईं । उन्हें समझ में आ गया कि उनके अव्वल आने के पीछे बड़े भाई की ही प्रेरणा रही है । उनके लिए बड़े भाई अपने मन की इच्छा को दबा कर रखते हैं | जब छोटे भाई को इस बात का एहसास हुआ तो उनके मन में अपने बड़े भाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई ।

प्रश्न :- 11 बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए |

उत्तर :- बड़े भाई साहब **अध्ययनशील** हैं, हमेशा किताबे खोले बैठे रहते हैं, **घोर परिश्रमी** हैं । चाहे उन्हें समझ में न भी आए परिश्रम करते रहते हैं । वह **वाकपदु** भी हैं, छोटे भाई को तरह तरह से समझाते हैं । उन्हें बडप्पन का अहसास है। इसलिए वह छोटे भाई को भी समझाते हैं । **उपदेश देने की कला में निपुण** हैं , जब भी मौका मिलता वे छोटे भाई को उपदेश देते थे | **अनुभवी** होने से जीवन में अनुभव की महत्ता समझाते हैं । वे **कर्तव्य परायण** हैं , अपने बड़ों का आदर करते हैं , और अपनी **जिम्मेदारी** को अच्छी तरह से समझते हैं | वे **अनुशासन प्रिय** थे , अपने छोटे भाई को अनुशासित रखना चाहते थे | **समय के पाबंध** थे , अपने छोटे भाई को समय का सदुपयोग करने की सलाह देते थे |

प्रश्न :- 12 बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

उत्तर :- बड़े भाई साहब ने जिदंगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण माना है। जो ज्ञान बड़ों को है वह पुस्तकें पढ़ कर हासिल नहीं होता है। ज़िंदगी के अनुभव उन्हें ठोस धरातल देते हैं जिससे हर परिस्थिति का सामना किया जा सकता है । पुस्तकें व्यवहार की भूमि नहीं होती है। गलत-सही, उचित-अनुचित की जानकारी अनुभवों से ही आती है । अपनी माँ तथा पिताजी का उदाहरण देकर वे इसी बात को समझाने की कोशिश करते हैं कि उनके पास कोई डिग्री नहीं थी फिर भी जीवन में हजारों ऐसी बातें हैं जिनका ज्ञान उन्हें हमसे ज्यादा है | अत: जीवन के अनुभव किताबी ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण हैं ।

काव्य २ पद

मीराबाई

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न :- 1 पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है ?

उत्तर :- मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती की है – प्रभु जिस प्रकार आपने द्रोपदी का वस्त्र बढ़ाकर भरी सभा में उसकी लाज रखी, नरसिंह का रुप धारण करके हिरण्यकश्यप को मार कर भक्त प्रह्लाद को बचाया, मगरमच्छ ने जब हाथी के पैर को पकड़ कर पानी में खींच लिया था तब अपने उसे डूबने से बचाया था तथा उसकी पीड़ा भी हर ली थी । हे प्रभु ! इसी तरह मुझे भी हर संकट से बचाकर पीड़ा मुक्त करो।

प्रश्न :- 2 दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- मीरा बाई कृष्ण की अनन्य भक्त हैं | वे कृष्ण का सानिध्य चाहती हैं | उनके पास रहना चाहती हैं | वे कृष्ण के समीप रहकर उनके दर्शन का लाभ लेने , उनका नाम स्मरण करने तथा भावपूर्ण भक्ति की जागीर पाने के लिए वे श्याम की चाकरी करना चाहती हैं |

प्रश्न :- 3 मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रुप–सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

उत्तर :- मीरा ने कृष्ण के रुप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि उनके सिर पर मोर के पंखों का मुकुट है, वे पीले वस्त्र पहने हैं और गले में वैजंती फूलों की माला पहनी है, वे बाँसुरी बजाते हुए गायें चराते हैं और बहुत सुंदर लगते हैं।

प्रश्न :- 4 मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- मीराबाई की भाषा शैली राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इसके साथ ही गुजराती भाषा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। मीराबाई की भाषा में पंजाबी , खड़ी बोली , और पूर्वी के प्रयोग भी मिल जाते हैं | इसमें सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है। पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है, पदों में भक्तिरस है तथा अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रुपक आदि अलंकार इसमें हैं।

प्रश्न :- 5 वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या–क्या कार्य करने को तैयार हैं ?

उत्तर :- मीरा कृष्ण को पाने के लिए अनेक कार्य करने को तैयार हैं। वे कृष्ण की दासी बन कर उनकी सेवा कर उनके साथ रहना चाहती हैं, उनके विहार करने के लिए बाग बगीचे लगाना चाहती हैं। ताकि प्रातः काल उठ कर वे कृष्ण के दर्शन कर सकें | वे वृंदावन की गलियों में घूम - घूम कर उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं| वे ऊँचे–ऊँचे महलों में बड़ी - बड़ी

खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर आधी रात को कृष्ण से मिलकर उनके दर्शन करना चाहती हैं।

काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :-

1 हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रुप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

उत्तर :- इस पद में मीरा ने कृष्ण के भक्तों पर कृपा दृष्टि रखने वाले रुप का वर्णन किया है। वे कहती हैं – "हे हरि ! जिस प्रकार आपने अपने भक्तजनों की पीड़ा हरी है, मेरी भी पीड़ा उसी प्रकार दूर करो। जिस प्रकार द्रोपदी का चीर बढ़ाकर, प्रह्लाद के लिए नरसिंह रुप धारण कर आपने रक्षा की, उसी प्रकार मेरी भी रक्षा करो।" इसकी भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। 'र' ध्वनि का बारबार प्रयोग हुआ है तथा 'हरि' शब्द में श्लेष अलंकार है।

2 बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

उत्तर :- इन पंक्तियों में मीरा ने कृष्ण से अपने दुख दूर करने की प्रार्थना की है। वे कहती हैं हे कृष्ण जैसे अपने डूबते गजराज को बचाया और उसकी रक्षा की वैसे ही प्रभु आप मेरी समस्त पीड़ा को दूर कीजिये | इसमें दास्य भक्तिरस है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। अनुप्रास अलंकार है, भाषा सरल तथा सहज है।

3 चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

इसमें मीरा कृष्ण की चाकरी करने के लिए तैयार हैं क्योंकि इससे वह उनके दर्शन, नाम, स्मरण और भावभक्ति पा सकती हैं । इसमें दास्य भाव दर्शाया गया है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। अनुप्रास अलंकार, रुपक अलंकार और कुछ तुकांत शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

1 कबीर

दोहे

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए –

प्रश्न 1 मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर : जब भी हम मीठी वाणी बोलते हैं, तो उसका प्रभाव चमत्कारिक होता है। इससे सुनने वाले की आत्मा तृप्त होती है और मन प्रसन्न होता है। उसके मन से क्रोध और घृणा के भाव नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही हमारा अंत:करण भी प्रसन्न हो जाता है। प्रभाव स्वरुप औरों को सुख और शीतलता प्राप्त होती है।

प्रश्न 2 :- दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- गहरे अंधकार में जब दीपक जलाया जाता है तो अँधेरा मिट जाता है और उजाला फैल जाता है। कबीरदास जी कहते हैं उसी प्रकार ज्ञान रुपी दीपक जब हृदय में जलता है तो अज्ञान रुपी अंधकार मिट जाता है मन के विकार अर्थात संशय, भ्रम आदि नष्ट हो जाते हैं। तभी उसे सर्वव्यापी ईश्वर की प्राप्ति भी होती है।

प्रश्न 3 :- ईश्वर कण–कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उत्तर :- ईश्वर सब ओर व्याप्त है। वह निराकार है। हमारा मन अज्ञानता, अहंकार, विलासिताओं में डूबा है। इसलिए हम उसे नहीं देख पाते हैं। हम उसे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा सब जगह ढूँढने की कोशिश करते हैं लेकिन जब हमारी अज्ञानता समाप्त होती है हम अंतरात्मा का दीपक जलाते हैं तो अपने ही अंदर समाया ईश्वर हम देख पाते हैं।

प्रश्न 4 :- संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- कवि के अनुसार संसार में वो लोग सुखी हैं, जो संसार में व्याप्त सुख-सुविधाओं का भोग करते हैं और दुखी वे हैं, जिन्हें ज्ञान की प्राप्ति हो गई है। 'सोना' अज्ञानता का प्रतीक है और 'जागना' ज्ञान का प्रतीक है। जो लोग सांसारिक सुखों में खोए रहते हैं, जीवन के भौतिक सुखों में लिप्त रहते हैं वे सोए हुए हैं और जो सांसारिक सुखों को व्यर्थ समझते हैं, अपने को ईश्वर के प्रति समर्पित करते हैं वे ही जागते हैं। वे संसार की दुर्दशा को दूर करने के लिए चिंतित रहते हैं, सोते नहीं है अर्थात जाग्रत अवस्था में रहते हैं।

प्रश्न 5 :- अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर :- कबीर का कहना है कि हम अपने स्वभाव को निर्मल, निष्कपट और सरल बनाए रखना चाहते हैं तो हमें अपने आसपास निंदक रखने चाहिए ताकि वे हमारी त्रुटियों को बता सके। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

प्रश्न 6 :- 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई' –इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर :- इन पंक्तियों द्वारा कवि ने प्रेम की महत्ता को बताया है। ईश्वर को पाने के लिए एक अक्षर प्रेम का अर्थात ईश्वर को पढ़ लेना ही पर्याप्त है। बड़े-बड़े पोथे या ग्रन्थ पढ़ कर भी हर कोई पंडित नहीं बन जाता। केवल परमात्मा का नाम स्मरण करने से ही सच्चा ज्ञानी बना जा सकता है। अर्थात ईश्वर को पाने के लिए सांसारिक लोभ माया को छोड़ना पड़ता है।

प्रश्न 7 ;- कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

कबीर ने अपनी साखियाँ सधुक्कड़ी भाषा में लिखी है। इनकी भाषा मिलीजुली है। इनकी साखियाँ संदेश देने वाली होती हैं। वे जैसा बोलते थे वैसा ही लिखा है। लोकभाषा का भी प्रयोग हुआ है;जैसे– खायै, नेग, मुवा, जाल्या, आँगणि आदि भाषा में लयबद्धता, उपदेशात्मकता, प्रवाह, सहजता, सरलता शैली है।

प्रश्न :- 8 बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ। भाव स्पष्ट कीजिए |

इस कविता का भाव है कि जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम रुपी विरह का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता है। अर्थात भगवान के विरह में कोई भी जीव सामान्य नहीं रहता है। उस पर किसी बात का कोई असर नहीं होता है।

प्रश्न :- 9 कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन भाव स्पष्ट कीजिए |

इस पंक्ति में कवि कहता है कि जिस प्रकार हिरण अपनी नाभि से आती सुगंध पर मोहित रहता है परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह सुगंध उसकी नाभि में से आ रही है। वह उसे इधर-उधर ढूँढता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अज्ञानतावश वास्तविकता को नहीं जानता कि ईश्वर उसी में निवास करता है और उसे प्राप्त करने के लिए धार्मिक स्थलों, अनुष्ठानों में ढूँढता रहता है।

पाठ 3 तताँरा वमीरों कथा

लीलाधर मंडलोई

प्रश्न :- 1 तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?

उत्तर :- तताँरा की तलवार लकड़ी की थी औऱ हर समय तताँरा की कमर पर बँधी रहती थी। वह इसका प्रयोग सबके सामने नहीं करता था। उसमें अद्भुत दैवीय शक्ति थी। इसलिए तताँरा के साहसिक कारनामों के चर्चे चारों तरफ़ थे। वास्तव में वह तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

प्रश्न :- 2 वामीरों ने तताँरा को बोरूखी से क्या जवाब दिया ?

उत्तर :- वामीरों ने तताँरा को बेरूखी से जवाब दिया क्योंकि वह अपने गाँव के युवक के अलावा किसी से भी बात नहीं करती थी। पहले वह बताए कि वह कौन है जो इस तरह प्रश्न पूछ रहा है

प्रश्न :- 3 तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर :- तताँरा-वामीरो के गाँव वालों में पहले आपसी संबंध नहीं थे। विवाह तो दूर वे आपस में बात भी नहीं करते थे परन्तु इनकी त्यागमयी मृत्यु के बाद दूसरे गाँव के युवक तथा युवती के बीच वैवाहिक संबंध भी करने लगे।

प्रश्न :- 4 निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे ?

उत्तर :- निकोबार के लोग तताँरा को उसके आत्मीय स्वभाव के कारण पसन्द करते थे, उससे बेहद प्रेम करते थे। वह नेक ईमानदार और साहसी था। वह मुसीबत के समय भाग भागकर सबकी मदद करता था।

प्रश्न :- 5 निकोबार द्वीप समूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है ?

उत्तर :- निकोबारियों का विश्वास था कि पहले अडंमान निकोबार दोनों एक ही द्वीप थे। इनके दो होने के पीछे तताँरा-वामीरो की लोक कथा प्रचलित है। तंतारा और वमीरो दोनों एक दूसरे से बेहद प्रेम करते थे। दोनों एक गाँव के नहीं थे। इसलिए रीति अनुसार विवाह नहीं हो सकता था । रूढ़ियों में जकड़ा होने के कारण वह कुछ कर भी नहीं सकता था। उसे अत्यधिक क्रोध आया और उसने क्रोध में अपनी तलवार धरती में गाड़ दी और उसे खींचते खींचते वह दूर भागता चला गया। इससे ज़मीन दो भागों में बँट गई – एक निकोबार और दूसरा अंडमान।

प्रश्न :- 6 तताँरा खूब परिश्रम करने के बाद कहाँ गया ? वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर :- तताँरा दिनभर खूब परिश्रम करने के बाद समुद्र के किनारे टहलने निकल गया। वहां का प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बनता था |समुद्र से ठंडी हवाएँ आ रही थीं। पक्षियों की चहचहाट धीरे-धीरे कम हो रही थी। डूबते सूरज़ की किरणें समुद्र के पानी पर पड़कर रंग-बिरंगी रोशनी छोड़ रही थीं | समुद्र का पानी बहते हुए आवाज़ कर रहा था मानो कोई गीत गा रहा हो। पूरा वातावरण बहुत मोहक लग रहा था।

प्रश्न :- 7 वामीरो से मिलने के बाद तताँरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर :- तताँरा बहुत धीर गंभीर व शांत स्वभाव का युवक था | वामीरो से मिलने के बाद तताँरा बहुत बैचेन रहने लगा। वह अपनी सुधबुध खो बैठा। वह शाम की प्रतिक्षा करता ताकि वह वामीरो से मिल सके। वह दिन ढलने से पहले ही लपाती की समुद्री चट्टान पर पहुँच गया। उसे एक-एक पल पहाड़ जैसा लग रहा था। उसे वामीरो के न आने की आशंका होने लगती है। किन्तु वह प्रतीक्षारत है | लपाती के रास्ते पर वामीरो को देखने के लिए नज़रे दौड़ाता। अतः वामीरो से मिलने के बाद तताँरा का जीवन पूरी तरह बदल गया |

प्रश्न :- 8 प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे ?

उत्तर :- प्राचीन काल में मनोरंजन तथा शक्ति प्रदर्शन के लिए मेले तमाशे तथा पशु पर्व का आयोजन किया जाता था | इनमें हष्ट पुष्ट पशुओं के साथ शक्ति प्रदर्शन किए जाते थे। पशुओं के साथ युवकों की शक्ति परीक्षा की प्रतियोगिता भी होती थी | लड़ाकू साँडों, पहलवानों की कुश्ती, तलवार बाजी जैसे शक्ति प्रदर्शन के कार्यक्रम होते थे। तीतर, बटेर की लड़ाई, पंतगबाजी, आदि का आयोजन होता था | बाद में नृत्य-संगीत और भोजन का कार्यक्रम होता था |

प्रश्न :- 9 रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें तब उनका टूट जाना ही अच्छा है। क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- रूढ़ियां और बंधन समाज को अनुशासित करने के लिए बनते हैं परन्तु इन्हीं के द्वारा मनुष्य की भावनाएं आहत होने लगे, बंधन बनने लगे और बोझ लगने लगे तो उसका टूट जाना ही अच्छा होता है। जिस प्रकार तताँरा वामीरो से प्रेम करता है, उससे विवाह करना चाहता है। किन्तु गाँव की रीति के अनुसार वह उस गाँव का न होने से वामीरो से विवाह नहीं कर सकता था | अंततः दोनों को अपनी जान गंवानी पड़ी | तो ऐसी रूढ़ियाँ भला किस काम की जो दूसरों की जान ले ले | समाज की भलाई करने की बजाय जो रीति रिवाज ,परम्पराएँ रूढ़ियां नुकसान करती हैं , तो उनका टूट जाना समाज के लिए बेहतर है।

वाक्य रूपांतरण

रचना के आधार पर वाक्य रूपांतरण

वाक्य की परिभाषा

पदों के व्यवस्थित रूप तथा ऐसे पारस्परिक मेल को, जिससे पूर्ण अर्थ का बोध हो तथा जिसमें कर्ता,कर्म और क्रिया की व्यवस्था हो,वाक्य कहा जाता है।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं।

1. उद्देश्य 2. विधेय

(क) उद्देश्य

अध्यापक व्याकरण पढ़ा रहे हैं।

विमल बाजार जाता है।

उपर्युक्त उदाहरणों में अध्यापक और विमल उद्देश्य हैं क्योंकि इनके विषय में कुछ कहा गया है। उद्देश्य को कर्ता भी कहते हैं।

❖ वाक्य में जिसके विषय में कुछ बात कही जाए, वह उद्देश्य कहलाता है।

(ख) विधेय

उपर्युक्त उदाहरणों में उद्देश्यों के बारे में कुछ न कुछ कहा गया है- व्याकरण पढ़ा रहे हैं- अध्यापक के विषय में,बाजार जाता है- विमल के विषय में कहा गया है। अत: ये विधेय हैं।

❖ वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं।

वाक्य के प्रकार-

वाक्य के दो प्रकार हैं- (क) अर्थ के आधार पर

(ख) रचना के आधार पर

(क) अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं।

1.विधानवाचक 2. निषेधवाचक 3.प्रश्नवाचक 4.इच्छावाचक

5.संदेहवाचक 6.आज्ञावाचक 7.संकेतवाचक 8.विस्मयवाचक

रचना के आधार पर वाक्य रूपांतरण

निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए –

1. मुझे बनारस जाना है।
2. मुझे बनारस जाना है और वहाँ से बनारसी साड़ी खरीदनी है।
3. पापा ने कहा है कि मुझे आज ही बनारस जाना है तथा साड़ी खरीदकर लखनऊ पहुँचना है।

इन वाक्यों में पहला वाक्य एक वाक्य है क्योंकि इसमें एक ही क्रिया है। दूसरे वाक्य में दो वाक्य हैं जो और योजक से जुड़े हैं। तीसरे वाक्य में तीन वाक्य हैं, ये योजक कि और तथा से जुड़े हैं। इस तरह वाक्य के तीन भेद हैं।

1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं-

1.सरल वाक्य

जिन वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, सरल वाक्य कहलाते हैं। इन वाक्यों में एक मुख्य क्रिया होती है। सरल वाक्य लंबे एवं छोटे दोनों प्रकार के हो सकते है; जैसे

- रमेश प्रतिदिन घर का कार्य करने के पश्चात् भी समय से स्कूल पहुँचता है।
- लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे।
- रावण भूमंडल का स्वामी था।

❖उपरोक्त वाक्य सरल वाक्य हैं, क्योंकि इन वाक्यों में केवल एक ही मुख्य क्रिया है।

2. संयुक्त वाक्य

संयुक्त में दो या दो से अधिक उपवाक्य होते हैं। तथा वे सभी उपवाक्य स्वतंत्र होते हैं तथा समान स्तर के अर्थात किसी पर आश्रित नहीं होते हैं। ये उपवाक्य विभिन्न समानाधिकरण योजक (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिर, भी, तो, नहीं तो, किंतु, लेकिन,अन्यथा,वरना आदि) शब्दों की सहायता से जुड़े रहते हैं ; जैसे –

- ये वजीर अली आदमी है या भूत ।
- मुझे बुखार था इसलिए मैं विद्यालय नहीं जा सका ।
- मैंने सुरेश की बहुत प्रतीक्षा की, किन्तु वह नहीं आया ।

❖ ये सभी वाक्य विभिन्न समानाधिकरण योजकों के द्वारा जुड़े हुए हैं।

3. मिश्र वाक्य

वे वाक्य जिनमें एक प्रधान (मुख्य) उपवाक्य हो तथा एक या एक से अधिक उपवाक्य उस पर आश्रित हों, मिश्र वाक्य कहलाते हैं अर्थात् इन वाक्यों की रचना एक से अधिक सरल वाक्यों से होती है। इसमें प्रयुक्त उपवाक्य परस्पर व्यधिकरण योजकों (जैसे यदि, कि, तो, जो, अगर, इसलिए आदि) से जुड़े होते हैं, जैसे-

- मैं भी वही भोजन खाऊँगा, जो मेरे पिता ने खाया है। (प्रधान उपवाक्य) (आश्रित उपवाक्य)
- गाय ही ऐसा पशु है, जो हिंदुओं के लिए आदरणीय है। (प्रधान उपवाक्य) (आश्रित उपवाक्य)
- यदि रमन परिश्रम करता, तो अवश्य सफल होता। (प्रधान उपवाक्य) (आश्रित उपवाक्य)
- जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही गुस्सा कम आता है।

विज्ञापन

विज्ञापन-लेखन

- विज्ञापन का अर्थ है-`किसी वस्तु या तथ्य की विशेष जानकारी या सूचना देना।'
- विज्ञापन के उद्देश्य
- उत्पादों का परिचय कराना, उपभोक्ताओं का ध्यान उत्पाद की ओर आकर्षित करना, उत्पादों की आवश्यकता का अनुभव कराना।
- उत्पादों के विक्रय में वृदधि करना और उनका व्यापक प्रचार करना।
- अपनी सेवा, संस्था या उद्योग के लिए उपयुक्त लोगों को खोजना।
- समाज को कोई आवश्यक संदेश देना।

विज्ञापन के अंग

- `विज्ञापन' किसी उत्पाद की संपूर्ण जानकारी उपभोक्ता तक पहुँचाता है इसलिए विज्ञापन का आकर्षक होना आवश्यक है। एक अच्छे विज्ञापन के निम्नलिखित अंग हैं:-
- **विषयवस्तु (थीम)-** सटीक तथा आकर्षक होना चाहिए।
- **शीर्षक (टाइटल)-** विषयानुकूल तथा प्रभावी होना चाहिए।
- **चित्र (इलस्ट्रेशन)-** सुंदर व मनोहारी होना चाहिए।
- **रंग (कलर)-** रंग-योजना वैविध्यपूर्ण होना चाहिए।
- **व्यवसाय चिह्न (लोगो)**- मोनोग्राम/प्रतीक चिह्न का प्रयोग होना चाहिए
- **नारा (स्लोगन)**- गुणवत्ता का सूचक होना चाहिए।
- **बाहरी विन्यास (ले-आउट)**- संतुलित, आकर्षक और रूचिपूर्ण हो।

ध्यान रखने योग्य प्रमुख बातें.....

- विज्ञापन के ले-आउट में संतुलन होना चाहिए।
- शब्दों का कम-से-कम-प्रयोग ।
- छोटे वाक्यों का प्रयोग ।
- तथ्यों का ध्यान रखा जाए।
- सूचनाप्रद हो।
- नकारात्मक बातें न लिखें।
- संदेश या नारा विशेष रूप से रेखांकित हो।
- संदेश स्पष्ट होना चाहिए।
- भाषा रोचक, संक्षिप्त तथा आकर्षक होना चाहिए। तुक का प्रयोग किया जा सकता है।

विज्ञापन में प्रयुक्त होने वाले कुछ प्रेरक वाक्य

- धमाका सेल!!
- जल्दी कीजिए !
- मौके का लाभ उठाएँ !
- पहले आओ! पहले पाओ!
- सोचिए मत, खरीद लीजिए!!
- 100% सुरक्षा की गारंटी !
- आपके शहर में पहली बार!
- ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा!!
- ऑफ़र सीमित समय के लिए
- स्टॉक सीमित है;जल्दी करें

विज्ञापन के प्रकार-डिस्प्ले विज्ञापन-1-`रक्षक' हेलमेट के लिए विज्ञापन ।

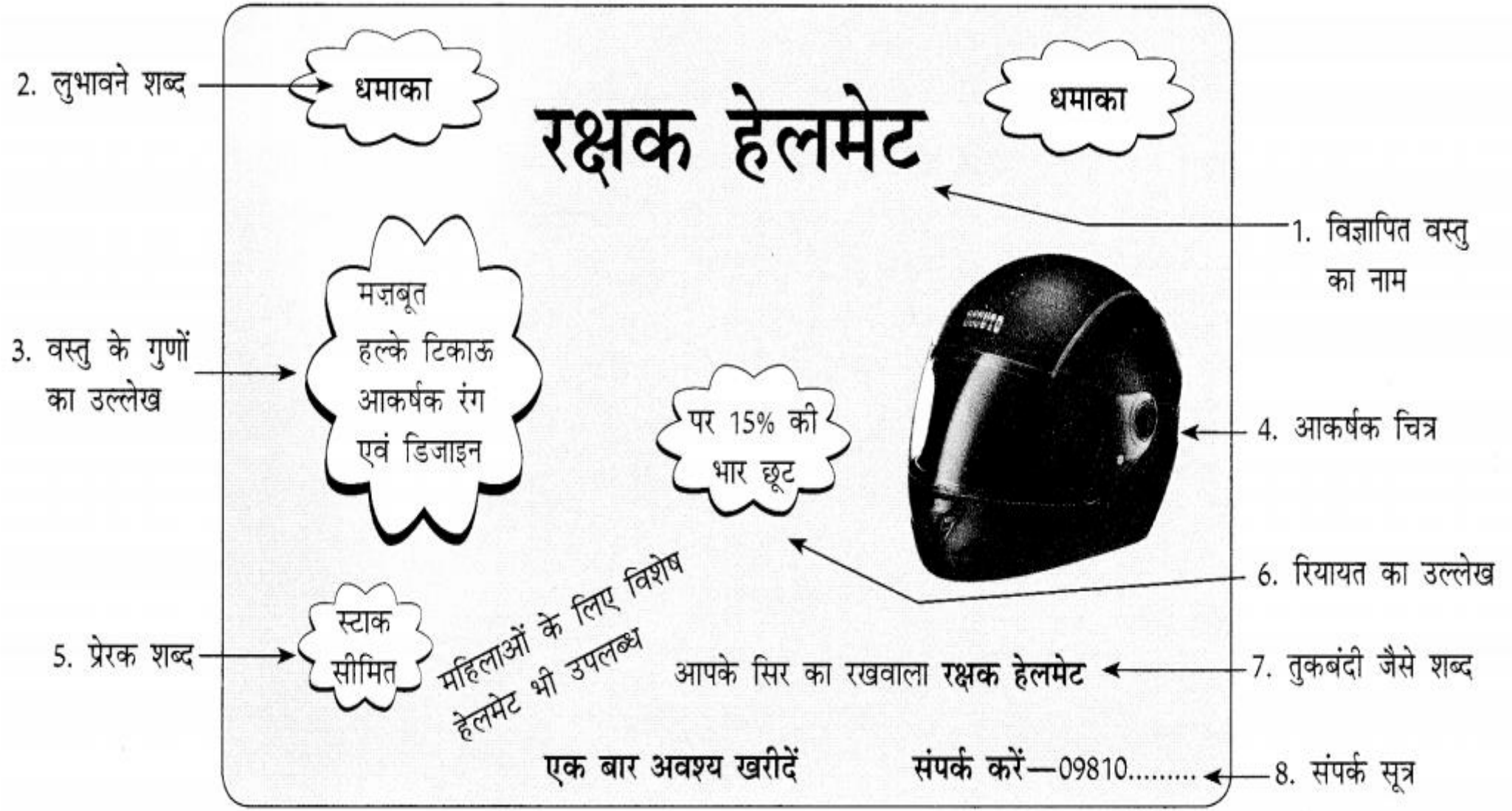

डिस्प्ले विज्ञापन-2- छात्रों द्वारा बनाई गईं मोमबत्तियों के लिए विज्ञापन ।

मॉडर्न स्कूल के छात्रों द्वारा निर्मित मोमबत्तियाँ
और अन्य उपयोगी वस्तुएँ

कम दामों
में उपलब्ध

एक के साथ
एक मोमबत्ती
मुफ्त

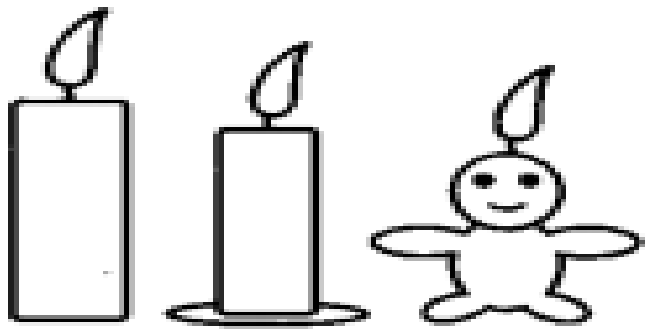

चमचम चमके
दमदम दमके
मॉडर्न स्कूल
निर्मित मोमबत्ती

खरीदने के लिए सम्पर्क करें—01198913495 8
www.modernmombatti@org.com

डिस्प्ले विज्ञापन-3-घर की बनी चॉकलेट का विज्ञापन

XXX चॉकलेट

घर की बनी स्वादिष्ट चॉकलेट

"एक बार खाएँगे
बार–बार चाहेंगें
माँ का प्यार चॉकलेट में पाएँगे।"

मात्र
₹ 10/-

विरमानी डिर्पाटमेंटल
स्टोर पर भी उपलब्ध!!!

एक के
साथ एक
मुफ्त

दूरभाष – XXXXXX

वर्गीकृत विज्ञापन-1-घर बेचने के लिए विज्ञापन

बिकाऊ है

बिकाऊ है

बिकाऊ है

200 वर्ग गज में निर्मित 2 मंजिल एक पुराना रहने योग्य मकान
बाजार, सब्जी मण्डी, मेन सड़क, स्कूल तथा रेलवे स्टेशन के नजदीक
बाबू गुलाब राय मार्ग, देहली गेट आगरा।

सम्पर्क करें - किशन सिंह
9872XXXXXX

वर्गीकृत विज्ञापन-2- घरेलू सामान बेचने के लिए विज्ञापन

बिकाऊ है

घर के नए सामान जैसे फ्रिज, टी वी, वॉशिंग मशीन,सोफा सेट, कूलर आदि बेचना है। इच्छुक खरीददार स्वंय संपर्क करें। पता: घनश्याम दास, अरेरा कॉलोनी, अबस नगर ।

दूरभाष: 0091.....

सामाजिक विज्ञापन-1- पर्यावरण जागरूकता के लिए विज्ञापन

पर्यावरण जागरूकता के लिए लगाये गए विज्ञापन

पर्यावरण जागरूकता दौड़-दिनांक 16 अगस्त, 20×× को इण्डिया गेट से शुरू होगी।

पर्यावरण यानी पौधों का वृक्षारोपण को बढ़ावा देने हेतु निम्न वर्गों में दौड़ों का आयोजन किया जा रहा है।

- 10 किमी की दौड़-भारतीय व अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों द्वारा
- 5 किमी की दौड़-महिलाओं के लिए
- 1 किमी की दौड़-वरिष्ठ नागरिकों के लिए

आप अपना पंजीकरण 10 अगस्त, 20×× तक करवा सकते हैं। भाग लेने वाले प्रतिभागियों को एक-एक टी शर्ट दौड़ शुरू होने से पहले मिलगी।

संयोजक-दिल्ली संघ

फोन नं. : FGHXXXXYZ

सामाजिक विज्ञापन-2- जल संरक्षण के लिए विज्ञापन

जल है।
तो कल है।

पृथ्वी की सतह पर दो तिहाई जल है ,परन्तु पीने योग्य जल केवल 0.002 ही है।

हम सब ने यह ठाना है
पानी को बचाना है।

सौजन्य से :
डी.ए.वी. स्कूल, चण्डीगढ (पहरेदार संस्था)

`उमंग' नाम से लड़कियों के एक एन.जी.ओ. (NGO) का विज्ञापन तैयार कीजिए।

बेटी बचाओ !! बेटी पढ़ाओ !!

उमंग

बेटी देश का भविष्य है, बेटी को बढ़ावा दो, ताकि देश का विकास हो।

सूचना- गामीण इलाकों में कक्षा आठवीं तक कोई फ़ीस नहीं!

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: उमंग, 123, क ख ग नगर

दूरभाष:01234567890

अभ्यास-प्रश्न

- आपको अपनी पुरानी सेंट्रो कार बेचनी है। इस हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।
- आपको अपना घर किराए पर देना है। इसके लिए एक वर्गीकृत विज्ञापन तैयार कीजिए।
- `बाल विद्यापीठ' द्वारा गरीब बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा सुविधा दी जा रही है। इसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।
- `मॉडर्न शूज़' कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।
- नीमयुक्त `मुस्कान' टूथपेस्ट के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Done by: Ms Bini, EFIA, ABU DHABI

लघु कथा लेखन

लघु कथा लेखन क्या व किस प्रकार

लघु कथा शब्द का निर्माण लघु और कथा से मिलकर हुआ है। अर्थात लघुकथा गद्य की एक ऐसी विधा है जो आकार में "लघु" है और उसमे " कथा" तत्व विद्यमान है। अर्थात लघुता ही इसकी मुख्य पहचान है। जिस प्रकार उपन्यास खुली आँखों से देखी गई घटनाओं का, परिस्थितियों का संग्रह होता है, उसी प्रकार कहानी दूरबीनी दृष्टि से देखी गयी किसी घटना या कई घटनाओं का वर्णन होती है। इसके विपरीत लघुकथा के लिए माइक्रोस्कोपिक दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है

उदहारण के तौर पर खाना खाते हुए किसी व्यक्ति का हास्यास्पद चेहरा, किसी धीर-गंभीर समझे जाने वाले व्यक्ति के ठुमके, किसी नन्हे बच्चे की सुन्दर पोशाक, किसी की निश्छल हँसी, मस्त सा किसी का चेहरा, किसी की उदास भाव-भंगिमा या विदाई के समय दूल्हा पक्ष के किसी व्यक्ति के आँसू। यही वे क्षण हैं जो लघु कथा हैं। लघु कथा उड़ती हुई तितली के परों के रंग देख-गिन लेने की कला का नाम है। स्थूल में सूक्ष्म ढूँढ लेने की कला ही लघु कथा है। भीड़ के शोर-शराबे में भी किसी नन्हें बच्चे की खनखनाती हुई हँसी को साफ़ साफ़ सुन लेना लघु कथा है। भूसे के ढेर में से सुई ढूँढ लेने की कला का नाम लघु कथा है।

दरअसल लघु कथा किसी बहुत बड़े परिदृश्य में से एक विशेष क्षण को चुरा लेने का नाम है। लघु कथा को अक्सर एक आसान विधा मान लेने की गलती कर ली जाती है, जबकि वास्तविकता बिलकुल इसके विपरीत है। लघु कथा लिखना गद्य साहित्य की किसी भी विधा में लिखने से थोड़ा मुश्किल ही होता है। क्योंकि रचनाकार के पास बहुत ज़्यादा शब्द खर्च करने की स्वतंत्रता बिलकुल नहीं होती।

लघु कथा लेखन के लिए आवश्यक बिन्दु

लघु कथाकारों के लिए स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें :
1 * आकार में लघु और कथा-तत्व से सुसज्जित रचना को ही लघुकथा कहा जाता है।
2 * पात्रों की संख्या पर नियंत्रण रखना चाहिए । दो , तीन पात्र पर्याप्त हैं ।
3 * शीर्षक का चुनाव सोच समझ कर करें। या तो शीर्षक ही कहानी को परिभाषित करता हो या कहानी शीर्षक को।
4* लघु कथा का अंत प्रभावशाली और विचारोत्तेजक होना चाहिए।
5 * एक लघु कथा अधिकतम 200 शब्दों से अधिक नहीं जानी चाहिए।
.

दी गई पंक्तियों को एक लघु कथा का रुप दीजिए ।

आज शाम से मैंने अपनी छत पर गुलेल और कुछ कंकर इकट्ठा कर रख लिए थे। कल सुबह सूरज निकलने के पहले वह फूल तोड़ने आएगा तो उसके सिर पर गुलेल से वार करूंगा। ०००००००००००००

एक धनी सेठ था। उसका एक ही बेटा था। उसका नाम त्रिशूल था। त्रिशूले एक अच्छा लड़का था। वह कठिन परिश्रम करता था। वह अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आता था। एक बार वह बुरी संगति में पड़ गया और लापरवाह हो गया। उसने स्कूल से भागना शुरु कर दिया।

oooooooooooooo

धन्यवाद

रचना के आधार पर सरल वाक्य का परिवर्तन

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य ==>

1 - सरल वाक्य ==> राधा नाचती - गाती है।
संयुक्त वाक्य ==> राधा नाचती है और गाती है।

2 - **सरल वाक्य ==>** मोहन हँसकर बोला।
संयुक्त वाक्य ==> मोहन हँसा और बोला।

3 -सरल वाक्य ==> तुम पढ़कर सो जाना।
संयुक्त वाक्य ==> तुम पढ़ना और सो जाना।

4 -सरल वाक्य ==> अंकित की कलम छूटकर गिर गई।
संयुक्त वाक्य ==> अंकित की कलम छूटी और गिर गई।

5 -सरल वाक्य ==> बादल घिरते ही मोर नाचने लगा।
संयुक्त वाक्य ==> बादल घिरे और मोर नाचने लगा।

6 -सरल वाक्य ==> प्रथम आते ही खेलने लगे।
संयुक्त वाक्य ==> प्रथम आया तथा खेलने लगा।

7 -सरल वाक्य ==> सूरज के निकलते ही फूल खिल उठे।
संयुक्त वाक्य ==> सूरज निकला और फूल खिल उठे।

8 -सरल वाक्य ==> अभि तथा दीपक खेल - कूद रहे हैं ।
संयुक्त वाक्य ==> अभि तथा दीपक खेल रहे हैं एवं कूद रहे हैं।

9 -सरल वाक्य ==> सूरज पढ़-लिखकर अधिकारी बना।
संयुक्त वाक्य ==> सूरज पढ़ा-लिखा और अधिकारी बना।

10 -सरल वाक्य ==> अभिषेक थैला लेकर बाज़ार चला गया ।
संयुक्त वाक्य ==> अभिषेक थैला लिया और बाज़ार चला गया।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य ==>

1 -सरल वाक्य ==> राधा नाचती - गाती है।
मिश्र वाक्य ==> जो नाचती - गाती है , वह राधा है।

2 -सरल वाक्य ==> मोहन हँसकर बोल।
मिश्र वाक्य ==> वह मोहन है जो हँसकर बोल।

3 -सरल वाक्य ==> तुम पढ़कर सो जाना।
मिश्र वाक्य ==> जब तुम पढ़ लेना तब सो जाना।

4 -सरल वाक्य ==> अंकित की कलम छूटकर गिर गई।
मिश्र वाक्य ==> जो कलम अंकित से छूटी , वह गिर गई।

5 -सरल वाक्य ==> बादल घिरते ही मोर नाचने लगा।
मिश्र वाक्य ==> जैसे ही बादल घिरे , मोर नाचने लगा।

6 -सरल वाक्य ==> प्रथम आते ही खेलने लगे।
मिश्र वाक्य ==> प्रथम जैसे ही आया वह , खेलने लगा।

7 -सरल वाक्य ==> सूरज के निकलते ही फूल खिल उठे।
मिश्र वाक्य ==> सूरज निकला और फूल खिल उठे।

8 -सरल वाक्य ==> अभि तथा दीपक खेल - कूद रहे हैं।
मिश्र वाक्य ==> जो खेल एवं कूद रहे हैं,वे अभि तथा दीपक हैं।

9 -सरल वाक्य ==> सूरज पढ़-लिखकर अधिकारी बना।
मिश्र वाक्य ==> जैसे ही सूरज पढ़-लिखा,वह अधिकारी बन गया।

10-सरल वाक्य ==> अभिषेक थैला लेकर चला गया।
मिश्र वाक्य ==> अभिषेक तब चला गया जब उसने थैला लिया।

रचना के आधार पर संयुक्त वाक्य का परिवर्तन

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य ==>

1 - संयुक्त ==> सभी लिख चुके हैं लेकिन सृजिता अभी तक लिख रही है।
सरल ==> सभी के लिख चुकने पर भी सृजिता लिख रही है।

2 - संयुक्त ==> निधि रात भर पढ़ती है ताकि परीक्षा देने की तैयारी कर सके।
सरल ==> निधि रातभर पढ़कर परीक्षा देने की तैयारी करती है।

3 - संयुक्त ==> अभिलाषा ने रोना शुरू किया और बेहोश हो गई।
सरल ==> अभिलाषा रोते हुए बेहोश हो गई।

4 - संयुक्त ==> एलिन फ़ेसबुक करती है या ह्वाट्सएप करती है।
सरल ==> एलिन फ़ेसबुक या ह्वाट्सएप करती है।

5 - संयुक्त ==> श्रेयसी बीमार थी अत: स्कूल नहीं आई।
सरल ==> श्रेयसी बीमार होने के कारण स्कूल नहीं आई।

6 - संयुक्त ==> सौमिता खाना खाई और चली गई।
सरल ==> सौमिता खाना खाकर चली गई।

7 - संयुक्त ==> आयुष ने केक काटा और सबको बाँट दिया ।
सरल ==> आयुष ने केक काट कर सबको बाँट दिया ।

8 - संयुक्त ==> सीमा को खेलना भी अच्छा लगता है और सोना भी।
सरल ==> सीमा को खेलना और सोना अच्छा लगता है।

9 - संयुक्त ==> तुम्हारे बारे में सभी बच्चे जानते हैं और बड़े भी।
सरल ==> तुम्हारे बारे में बच्चे और बड़े सभी जानते हैं।

10 - संयुक्त ==> उसके पास घड़ी तो थी किन्तु ठीक नहीं थी।

सरल ==> उसके पास ठीक घड़ी नहीं थी।

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य ==>

1- संयुक्त वाक्य ==> सभी लिख चुके हैं लेकिन सृजिता अभी तक लिख रही है।
मिश्र वाक्य ==> सृजिता लिख रही है जबकि सभी लिख चुके हैं।

2-संयुक्त वाक्य ==>निधि रात भर पढ़ती है ताकि परीक्षा देने की तैयारी कर सके।
मिश्र वाक्य ==> निधि इसलिए रातभर पढ़ती है क्योंकि वह परीक्षा देने की तैयारी करती है।

3- संयुक्त वाक्य ==>अभिलाषा ने रोना शुरू किया और बेहोश हो गई।
मिश्र वाक्य ==> जैसे ही अभिलाषा ने रोना शुरू किया, वह बेहोश हो गई।

4- संयुक्त वाक्य ==> एलिन फ़ेसबुक करती है या ह्वाट्सएप करती है ।
मिश्र वाक्य ==> जो फ़ेसबुक या ह्वाट्सएप करती है, वह एलिन है।

5- संयुक्त वाक्य ==> श्रेयसी बीमार थी , अत: स्कूल नहीं आई।
मिश्र वाक्य ==> श्रेयसी स्कूल नहीं आई क्योंकि वह बीमार थी।

6- संयुक्त वाक्य ==> सौमिता खाना खाई और चली गई।
मिश्र वाक्य ==> ज्योंही सौमिता ने खाना खाया, वह चली गई।

7- संयुक्त वाक्य ==> आयुष ने केक काटा और सबको बाँट दिया ।
मिश्र वाक्य ==> आयुष ने सबको केक तब बाँटा जब काट लिया।

8- संयुक्त वाक्य ==> सीमा को खेलना भी अच्छा लगता है और सोना भी।
मिश्र वाक्य ==> वह सीमा है जिसे खेलना और सोना अच्छा लगता है।

9- संयुक्त वाक्य ==> तुम्हारे बारे में सभी बच्चे जानते हैं और बड़े भी।
मिश्र वाक्य==> जिसके बारे में सभी बच्चे और बड़े जानते हैं,वह तुम हो।

10- संयुक्त वाक्य ==> उसके पास घड़ी तो थी , किन्तु ठीक नहीं थी।
मिश्र वाक्य ==> जो घड़ी उसके पास थी , वह ठीक नहीं थी।

रचना के आधार पर मिश्र वाक्य का परिवर्तन

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य ==>

1-मिश्र वाक्य ==> जब भी मैं विकास के घर गया,मेरा आदर सत्कार हुआ।
सरल वाक्य ==> विकास के घर जाने पर मेरा आदर सत्कार हुआ।

2-मिश्र वाक्य ==> विशाल ने जो मोबाइल खरीदा है, वह नया है।
सरल वाक्य ==> विशाल ने एक नया मोबाइल खरीदा है ।

3-मिश्र वाक्य ==> शिक्षक ने कहा कि सबको अपना गृहकार्य स्वयं करना है।
सरल वाक्य ==> शिक्षक ने सबको अपना गृहकार्य स्वयं करने को कहा है।

4-मिश्र वाक्य ==> जैसे ही हम बस से उतरे , रिक्शा वाले दौड़ पड़े।
सरल वाक्य ==> हमारे बस से उतरते ही रिक्शा वाले दौड़ पड़े।

5-मिश्र वाक्य ==> ज्योंही गुरुजी आए , भक्त शान्त हो गए।
सरल वाक्य ==> गुरुजी के आते ही भक्त शान्त हो गए।

6-मिश्र वाक्य ==> जब दुर्घटना की खबर सुना , तब मन दुखी हो गया।
सरल वाक्य ==> दुर्घटना की खबर सुनकर मन दुखी हो गया।

7-मिश्र वाक्य ==> ज्यों ही भीखमंगा दिखा , मधुसूदन को दया आ गई।
सरल वाक्य ==> भीखमंगे को देखकर मधुसूदन को दया आ गई

8-मिश्र वाक्य ==> जो लोग परिश्रमी थे , वे सफ़ल हो गए ।
सरल वाक्य ==> परिश्रमी लोग सफ़ल हो गए ।

9-मिश्र वाक्य ==> जैसे ही छुट्टी हुई , बच्चे घर चले गए।
सरल वाक्य ==> छुट्टी होते ही बच्चे घर चले गए।

10-मिश्र वाक्य ==> यद्यपि रूबी घर गई तथापि काम में नहीं लगी।
सरल वाक्य ==> रूबी घर जाकर भी काम में नहीं लगी।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य ==>

1-मिश्र वाक्य ==> जब भी मैं विकास के घर गया,मेरा आदर सत्कार हुआ।
संयुक्त वाक्य ==> विकास के घर मेरा आदर भी हुआ और सत्कार भी।

2-मिश्र वाक्य ==> विशाल ने जो मोबाइल खरीदा है, वह नया है।
संयुक्त वाक्य ==> विशाल ने एक मोबाइल खरीदा है और वह नया है।

3-मिश्र वाक्य ==> शिक्षक ने कहा कि सबको अपना गृहकार्य स्वयं करना है।
संयुक्त वाक्य==>शिक्षक ने गृहकार्य करने को कहा हैऔर स्वयं करने को कहा है।

4-मिश्र वाक्य ==> जैसे ही हम बस से उतरे , रिक्शा वाले दौड़ पड़े।
संयुक्त वाक्य ==> हम बस से उतरे और रिक्शा वाले दौड़ पड़े।

5-मिश्र वाक्य ==> ज्योंही गुरुजी आए , भक्त शान्त हो गए।
संयुक्त वाक्य ==> गुरुजी आए और भक्त शान्त हो गए।

6-मिश्र वाक्य ==> जब दुर्घटना की खबर सुना , तब मन दुखी हो गया।
संयुक्त वाक्य ==> दुर्घटना की खबर सुना और मन दुखी हो गया।

7-मिश्र वाक्य ==> ज्यों ही भीखमंगा दिखा , मधुसूदन को दया आ गई।
संयुक्त वाक्य ==> भीखमंगा दिखा और मधुसूदन को दया आ गई।

8-मिश्र वाक्य ==> जो लोग परिश्रमी थे , वे सफ़ल हो गए ।
संयुक्त वाक्य==> परिश्रमी लोग परिश्रम किए और सफ़ल हो गए।

9-मिश्र वाक्य ==> जैसे ही छुट्टी हुई , बच्चे घर चले गए।
संयुक्त वाक्य ==> छुट्टी हुई और बच्चे घर चले गए।

10-मिश्र वाक्य ==> यद्यपि रूबी घर गई तथापि काम में नहीं लगी।
संयुक्त वाक्य ==> रूबी घर गई लेकिन काम में नहीं लगी।

पुष्पा हिंदुजा

अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

दैनिक जीवन में हम अनेक लोगों से मिलते हैं, जो विभिन्न प्रकार के काम करते हैं- सड़क पर ठेला लगानेवाला, दूधवाला, नगर निगम का सफाईकर्मी, बस कंडक्टर, स्कूल अध्यापक, हमारा सहपाठी और ऐसे ही कई अन्य लोग। शिक्षा, वेतन, परंपरागत चलन और व्यवसाय के स्तर पर कुछ लोग निम्न स्तर पर कार्य करते हैं तो कुछ उच्च स्तर पर। एक माली के कार्य को सरकारी कार्यालय के किसी सचिव के कार्य से अति निम्न स्तर का माना जाता है, किंतु यदि यही अपने कार्य को कुशलतापूर्वक करता है और उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करता है तो उसका कार्य उस सचिव के कार्य से कहीं बेहतर है, जो अपने काम में ढिलाई बरतता है तथा अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह नहीं करता। क्या आप ऐसे सचिव को एक आदर्श अधिकारी कह सकते हैं? वास्तव में पद महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण होता है, कार्य के प्रति समर्पण-भाव और कार्य-प्रणाली में पारदर्शिता।

इस संदर्भ में गाँधी जी से उत्कृष्ट उदाहरण और किसका दिया जा सकता है, जिन्होंने अपने हर कार्य को गरिमामय मानते हुए किया। वे अपने सहयोगियों को श्रम की गरिमा की सीख दिया करते थे। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने सफ़ाई करने जैसे कार्य को भी कभी नीचा नहीं समझा और इसी कारण स्वयं उनकी पत्नी कस्तूरबा से भी उनके मतभेद हो गए थे।

बाबा आमटे ने समाज द्वारा तिरस्कृत कुष्ठ रोगियों की सेवा में अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया। सुंदरलाल बहुगुणा ने अपने प्रसिद्ध 'चिपको आंदोलन' के माध्यम से पेड़ों को संरक्षण प्रदान किया। फादर डेमियन ऑफ मोलोकाई, मार्टिन लूथर किंग और मदर टेरेसा जैसी महान आत्माओं ने इसी सत्य को ग्रहण किया। इनमें से किसी ने भी कोई सत्ता प्राप्त नहीं की, बल्कि अपने जन-कल्याणकारी कार्यों से लोगों के दिलों पर शासन किया। गाँधी जी का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष उनके जीवन का एक पहलू है, किंतु उनका मानसिक क्षितिज वास्तव में एक राष्ट्र की सीमाओं में बँधा हुआ नहीं था। उन्होंने सभी लोगों में ईश्वर के दर्शन किए। यही कारण था कि कभी किसी पंचायत तक के सदस्य नहीं बनने वाले गाँधी जी की जब मृत्यु हुई तो अमेरिका का राष्ट्रध्वज भी झुका दिया गया था।

<u>प्रश्न :</u>

(क) विभिन्न व्यवसाय करने वाले लोगों के समाज में निम्न स्तर और उच्च स्तर को किस आधार पर तय किया जाता है।

(ख) एक माली अथवा सफाईकर्मी का कार्य किसी सचिव के कार्य से बेहतर कैसे माना जा सकता है?

(ग) गाँधी जी काम के प्रति क्या दृष्टिकोण रखते थे। उनका अपनी पत्नी के साथ क्यों मतभेद हो गया?

(घ) बाबा आमटे, सुंदरलाल बहुगुणा, मदर टेरेसा आदि का उल्लेख क्यों किया गया है ?

(ङ) गाँधी जी की मृत्यु पर अमेरिका का राष्ट्रध्वज क्यों झुका दिया गया?

(च) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

गंगा भारत की एक अत्यन्त पवित्र नदी है, जिसका जल काफ़ी दिनों तक रखने के बावजूद अशुद्ध नहीं होता जबकि साधारण जल कुछ दिनों में ही सड़ जाता है। गंगा का उद्गम स्थल गंगोत्री या गोमुख है। गोमुख से भागीरथी नदी निकलती है और देवप्रयाग नामक स्थान पर अलकनंदा नदी से मिलकर आगे गंगा के रूप में प्रवाहित होती है। भागीरथी के देवप्रयाग तक आते-आते इसमें कुछ चट्टानें घुल जाती हैं जिससे इसके जल में ऐसी क्षमता पैदा हो जाती है जो उसके पानी को सड़ने नहीं देती।

हर नदी के जल में कुछ खास तरह के पदार्थ घुले रहते हैं जो उसकी विशिष्ट जैविक संरचना के लिए उत्तरदायी होते हैं। ये घुले हुए पदार्थ पानी में कुछ खास तरह के बैक्टीरिया को पनपने देते हैं तो कुछ को नहीं। कुछ खास तरह के बैक्टीरिया ही पानी की सड़न के लिए उत्तरदायी होते हैं तो कुछ पानी में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं को रोकने में सहायक होते हैं। वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि गंगा के पानी में भी ऐसे बैक्टीरिया हैं जो गंगा के पानी में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं को पनपने ही नहीं देते इसलिए गंगा का पानी काफ़ी लंबे समय तक खराब नहीं होता और पवित्र माना जाता

हमारा मन भी गंगा के पानी की तरह ही होना चाहिए तभी वह निर्मल माना जाएगा। जिस प्रकार पानी को सड़ने से रोकने के लिए उसमें उपयोगी बैक्टीरिया की उपस्थिति अनिवार्य है, उसी प्रकार मन में विचारों के प्रदूषण को रोकने के लिए सकारात्मक विचारों के निरंतर प्रवाह की भी आवश्यकता है। हम अपने मन को सकारात्मक विचार रूपी बैक्टीरिया द्वारा आप्लावित करके ही गलत विचारों को प्रविष्ट होने से रोक सकते हैं। जब भी कोई नकारात्मक विचार उत्पन्न हो सकारात्मक विचार द्वारा उसे समाप्त कर दीजिए।

प्रश्न

(क) गंगा के जल और साधारण पानी में क्या अंतर है?

(ख) गंगा के उद्गम स्थल को किस नाम से जाना जाता है? इस नदी को गंगा नाम कैसे मिलता है?

(ग) भागीरथी से देव प्रयाग तक का सफ़र गंगा के लिए किस तरह लाभदायी सिद्ध होता है?

(घ) बैक्टीरिया ही पानी में सड़न पैदा करते हैं और बैक्टीरिया ही पानी की सड़न रोकते हैं, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) मन को निर्मल रखने के लिए क्या उपाय बताया गया है?

(च) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

शब्द, पद और पदबंध

रचनाकार – प्रौमिला अय्यर

शब्द

- एक या अधिक अक्षरों या वर्णों से बनी स्वतंत्र, सार्थक ध्वनि
- उदाहरण –
  - राम
  - स्कूल
  - बुद्धिमान

शब्द के भेद

अविकारी	विकारी
क्रिया – विशेषण	संज्ञा
स्मुच्चयबोधक	सर्वनाम
संबंधबोधक	क्रिया
विस्मयादिबोधक	विशेषण

पद

- जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तब ये स्वतंत्र शब्द न रह कर लिंग, वचन, क्रिया, विशेषण, कारक आदि के नियमों से अनुशासित हो जाते हैं
- अर्थात व्याकरणिक नियमों से बंध जाते हैं
- उदाहरण –
  - राम वनवास को गए।
  - आज स्कूल की छुट्टी है।
  - बुद्धिमान होने के साथ-साथ विवेक भी होना चाहिए।

पद के भेद

- संज्ञा
- सर्वनाम
- क्रिया
- विशेषण
- अव्यय (क्रिया विशेषण)

पदबंध

- जब एक से अधिक पद जुड़कर एक ही व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं, ऐसे पद-समूह को पदबंध कहते हैं
- भेद –
  - संज्ञा पदबंध
  - सर्वनाम पदबंध
  - क्रिया पदबंध
  - विशेषण पदबंध
  - क्रिया विशेषण पदबंध

संज्ञा पदबंध

- पदबंध का अंतिम पद यदि संज्ञा पद हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो, तो वह संज्ञा पदबंध कहलाते हैं
- ये कर्ता, कर्म आदि के पूरक के स्थान पर प्रयोग होते हैं
- उदाहरण-
  - राम ने <u>लंका के राजा रावण को</u> मारा।
  - <u>आसमान में उड़ता गुब्बारा</u> फट गया।

सर्वनाम पदबंध

- जब एक से अधिक पद एक साथ जुड़कर सर्वनाम का कार्य करें, अर्थात जहाँ मुख्य पद सर्वनाम होता है, तो उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं
- उदाहरण-
  - विदेश से आए अतिथियों में कुछ हिंदी जानते हैं।
  - कक्षा में सदा शोर मचाने वाले तुम आज चुप क्यों हो?

विशेषण पदबंध

- जब एक से अधिक पद एक साथ जुड़कर विशेषण का कार्य करते हैं, अर्थात जहाँ शीर्ष पद विशेषण हो, तो उसे विशेषण पदबंध कहते हैं
- उदाहरण-
  - मोहन <u>बहुत नेक, ईमानदार तथा परिश्रमी</u> बालक है।
  - मुझे <u>दो किलो पिसी हुई लाल</u> मिर्च चाहिए।

क्रिया पदबंध

- एक से अधिक क्रिया-पदों से बनने वाले क्रिया-रूपों को क्रिया पदबंध कहते हैं
- उदाहरण-
  - आजकल के विद्यार्थी गाना <u>सुनते-सुनते पढ़ते हैं</u>।
  - वह <u>पढ़कर, खाना खाकर सो गया</u>।

क्रिया-विशेषण पदबंध

- जब कई पदों के योग से ऐसा पदबंध बने जो क्रिया की विशेषता बताए, अर्थात जहाँ प्रमुख पद क्रिया-विशेषण हो, तो वह क्रिया-विशैषण कहलाता है
- उदाहरण-
  - माँ <u>कल सुबह तक</u> आयेगी।
  - वह <u>लगभग साढ़े पाँच बजे</u> पहुँचा।
  - आलोचना <u>दबी ज़बान से</u> की जा रही थी।
  - यह सूखा <u>बारिश न होने से</u> हुआ।
  - यहाँ भुखमरी <u>भूकंप की वजह से</u> हुई।

धन्यवाद

पाठ 4 मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्रश्न :- 1 कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है ?

उत्तर :- प्रत्येक मनुष्य समयानुसार अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है क्योंकि जीवन नश्वर है। इसलिए मृत्यु से डरना नहीं चाहिए बल्कि जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे उसे बाद में भी याद रखा जाए। उसकी मृत्यु व्यर्थ न जाए। अपना जीवन दूसरों को समर्पित कर दें। जो केवल अपने लिए जीते हैं वे व्यक्ति नहीं पशु के समान हैं।

प्रश्न :- 2 उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है ?

उत्तर :- उदार व्यक्ति परोपकारी होता है। अपना पूरा जीवन पुण्य व लोकहित कार्यो में बिता देता है। किसी से भेदभाव नहीं रखता, आत्मीय भाव रखता है। कवि और लेखक भी उसके गुणों की चर्चा अपने लेखों में करते हैं। वह निज स्वार्थों का त्याग कर जीवन का मोह भी नहीं रखता।

प्रश्न :- 3 कवि ने दधीचि कर्ण , आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?

उत्तर :- कवि दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर त्याग और बलिदान का संदेश देता है कि किस प्रकार इन लोगों ने अपनी परवाह किए बिना लोक हित के लिए कार्य किए। दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ दान दी, कर्ण ने अपना सोने का रक्षा कवच दान दे दिया, रति देव ने अपना भोजनथाल ही दे डाला, उशीनर ने कबूतर के लिए अपना माँस दिया इस तरह इन महापुरुषों ने मानव कल्याण की भावना से 'पर' हेतु जीवन दिया।

प्रश्न :- 4 कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व–रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

उत्तर :- उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने गर्व–रहित जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी है। कवि का कहना है कि धन संपत्ति आने पर घमंड नहीं करना चाहिए। केवल आप ही सनाथ नहीं हैं। सभी पर ईश्वर की कृपा दृष्टि है। वह सभी को सहारा देता है।

प्रश्न :- 5 'मनुष्य मात्र बंधु है'से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- 'मनुष्य मात्र बंधु है'से तात्पर्य है कि सभी मनुष्य आपस में भाई बंधु हैं क्योंकि सभी का पिता एक ईश्वर है। इसलिए सभी को प्रेम भाव से रहना चाहिए, सहायता करनी चाहिए। कोई पराया नहीं है। सभी एक दूसरे के काम आएँ।

प्रश्न :- 6 कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

उत्तर :- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है जिससे सब मैत्री भाव से आपस में मिलकर रहें क्योंकि एक होने से सभी कार्य सफल होते हैं ऊँच–नीच, वर्ग भेद नहीं रहता। सभी एक पिता परमेश्वर की संतान हैं। अत: सब एक हैं।

प्रश्न :- 7 व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर :- कवि कहना चाहता है कि हमें ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए जो दूसरों के काम आए। मनुष्य को अपने स्वार्थ का त्याग करके परहित के लिए जीना चाहिए। दया, करुणा, परोपकार का भाव रखना चाहिए, घमंड नहीं करना चाहिए। यदि हम दूसरों के लिए जिएँ तो हमारी मृत्यु भी सुमृत्यु बन सकती है।

प्रश्न :- 8 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर :- कवि इस कविता द्वारा मानवता, प्रेम, एकता, दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति, सदभावना और उदारता का संदेश देना चाहता है। मनुष्य को नि:स्वार्थ जीवन जीना चाहिए। वर्गवाद, अलगाव को दूर करके विश्व बंधुत्व की भावना को बढ़ाना चाहिए। धन होने पर घमंड नहीं करना चाहिए तथा खुद आगे बढ़ने के साथ–साथ औरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए।

पाठ 5 पर्वत प्रदेश में पावस

सुमित्रानंदन पन्त

प्रश्न :- 1 पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- पर्वतीय इलाकों में वर्षाऋतु के समय प्रकृति पल - पल अपना परिवेश बदलती रहती है | मेखल आकार के पर्वत अपने हजारों पुष्प रुपी आँखों से पानी रूपी दर्पण में अपने विशालकाय शरीर को देखते हैं | पर्वतों पर बहते झरने मानो उनका गौरव गान कर रहे हैं। लंबे–लंबे वृक्ष आसमान को निहारते चिंतामग्न दिखाई दे रहे हैं। अचानक काले–काले बादल घिर आते हैं। ऐसा लगता है मानो बादल रुपी पंख लगाकर पर्वत उड़ना चाहते हैं।अत्यधिक बारिश होने के कारण केवल झरनों की ध्वनि सुनाई दे रही है |कोहरा धुएँ जैसा लगता है। इंद्र देवता बादलों के यान पर बैठकर नए–नए जादू दिखाना चाहते हैं।

प्रश्न :- 2 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है ? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है ?

उत्तर :- मेखलाकार का अर्थ है गोल, जैसे – कमरबंध। यहाँ इस शब्द का प्रयोग पर्वतों की श्रृंखला के लिए किया गया है। ये पावस ऋतु में दूर–दूर तक गोल आकृति में फैले हुए हैं।

प्रश्न :- 3 'सहस्र दृग–सुमन' से क्या तात्पर्य है ? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा ?

उत्तर :- पर्वतों पर हज़ारों रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। कवि को पहाड़ों पर खिले हज़ारों फूल पहाड़ की आँखों के समान लगते हैं। ये नेत्र अपने सुंदर विशालकाय आकार को नीचे तालाब के जल रुपी दर्पण में आश्चर्यचकित हो निहार रहे हैं।

प्रश्न :- 4 कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों ?

उत्तर :- कवि ने तालाब की समानता दर्पण से की है। जिस प्रकार दर्पण से प्रतिबिंब स्वच्छ व स्पष्ट दिखाई देता है, उसी प्रकार तालाब का जल स्वच्छ और निर्मल होता है। पर्वत अपना प्रतिबिंब दर्पण रुपी तालाब के जल में देखते हैं।

प्रश्न :- 5 पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे–ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं ?

उत्तर :- ऊँचे-ऊँचे पर्वत पर उगे वृक्ष आकाश की ओर देखते चिंतामग्न प्रतीत हो रहे हैं। जैसे वे आसमान की ऊचाइयों को छूना चाहते हैं। इससे मानवीय भावनाओं को बताया गया है कि मनुष्य सदा आगे बढ़ने का भाव अपने मन में रखता है।

प्रश्न :- 6 शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए ?

उत्तर :- आसमान में अचानक बादलों के छाने से मूसलाधार वर्षा होने लगी । वर्षा की भयानकता और धुंध से शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में धँस गए प्रतीत होते हैं।

प्रश्न :- 7 झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं ? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है ?

उत्तर :- झरने पर्वतों की ऊँची चोटियों से झर–झर करते बह रहे हैं। ऐसा लगता है मानो वे पर्वतों की महानता की गौरव गाथा गा रहे हों।

है टूट पड़ा भू पर अंबर। (समझाने हेतु)

सुमित्रानंदन पंत जी ने इस पंक्ति में पर्वत प्रदेश के मूसलाधार वर्षा का वर्णन किया है। पर्वत प्रदेश में पावस ऋतु में प्रकृति की छटा निराली हो जाती है। कभी–कभी इतनी धुआँधार वर्षा होती है मानो आकाश टूट पड़ेगा।

–यों जलद–यान में विचर–विचर

था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

उत्तर :- कभी गहरे बादल, कभी तेज़ वर्षा और तालाबों से उठता धुआँ – यहाँ वर्षा ऋतु में पल–पल प्रकृति वेश बदल जाता है। यह सब दृश्य देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे बादलों के विमान में विराजमान राजा इन्द्र विभिन्न प्रकार के जादुई खेल–खेल रहे हों।

मुहावरे

1 आँखे खुलना - (सचेत होना) - ठोकर खाने के बाद ही बहुत से लोगों की आँखे खुलती है ।

२. आँखे दिखाना - (बहुत क्रोध करना) - राम से मैंने सच बातें कह दी , तो वह मुझे आँख दिखाने लगा ।

3 ईंट से ईंट बजाना - (पूरी तरह से नष्ट करना) - राम चाहता था कि वह अपने शत्रु के घर की ईंट से ईंट बजा दे।

4. अंधे के हाथ बटेर लगना - किसी अयोग्य व्यक्ति को भाग्य से अचानक कोई अच्छी वस्तु मिल जाना

5. आड़े हाथों लेना - खरी - खरी सुनना - देरी से घर लौटने पर बिना कारण जाने माँ ने मुझे आडें हाथों ले लिया |

6. तलवार खींचना - बहुत नाराज होना - बात - बात पर तलवार खींचना अच्छी बात नहीं ,कभी मेरी बात भी धैर्य पूर्वक सुन लिया करो |

7. दांतों पसीने आना - अत्यंत मुश्किल कार्य करना - सर्दियों में पर्वतारोहण करके तो देखिए दांतों पसीने आ जाएगा |

8. प्राण सूखना - भयभीत हो जाना - सामने से आते हुए शेर को देख कर हम सब के प्राण सूख गए |

9. सर पर नंगी तलवार लटकाना - हमेशा खतरा मंडराना - सीमा पर तैनात सुरक्षाकर्मियों के सर पर हमेशा नंगी तलवार लटकती रहती है |

10. रंग दिखाना - असली रूप दिखाना - नेताजी ने चुनाव जीतने के बाद भी अपने क्षेत्र में अपना रंग दीखन शुरू कर दिया |

अन्य मुहावरों का वाक्य प्रयोग व्याकरण पुस्तक से कराया जाएगा |

हरिहर काका

मिथिलेश्वर

प्रश्न :- 1 कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं ?

उत्तर :- हरिहर काका और कथावाचक (लेखक) दोनों के बीच में बड़े ही मधुर एवं आत्मीय संबंध थे, क्योंकि दोनों एक गाँव के निवासी थे। कथावाचक गाँव के चंद लोगों का ही सम्मान करता था और उनमें हरिहर काका एक थे। इसके दो कारण थे पहला व्यावहारिक और दूसरा वैचारिक | व्यावहारिक इसलिए कि हरिहर काका उनके पड़ौसी थे | वैचारिक इसलिए कि कथावाचक जब छोटे थे तब से ही हरिहर काका उन्हें बहुत प्यार करते थे। जब वह बड़े हो गए तो वह हरिहर काका के मित्र बन गए। गाँव में इतनी गहरी दोस्ती और किसी से नहीं हुई। हरिहर काका उनसे खुल कर बातें करते थे। यही कारण है कि कथावाचक को उनके एक-एक पल की खबर थी। शायद अपना मित्र बनाने के लिए काका ने स्वयं ही उसे प्यार से बड़ा किया और इतंजार किया।

प्रश्न :- 2 हरिहर काका को मंहत और भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे ?

उत्तर :- हरिहर काका को अपने भाइयों और महंत में कोई अतंर नहीं लगा। दोनों एक ही श्रेणी के लगे। हरिहर काका एक निःसंतान व्यक्ति थे। उनके पास पंद्रह बीघे जमीन थी। हरिहर काका के भाइयों ने पहले तो उनकी खूब देखभाल की परंतु धीरे-धीरे उनकी पत्नियों ने काका के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। महंत को जब यह पता चला तो वह बहला-फुसलाकर काका को ठाकुरबारी ले आए और उन्हें वहाँ रखकर उनकी खूब सेवा की। साथ ही उसने काका से उनकी पंद्रह बीघे जमीन ठाकुरबारी के नाम लिखवाने की बात की। काका ने जब ऐसा करने से मना किया तो महंत ने उनका अपहरण करवा लिया | उन्हें मार-पीटकर जबरदस्ती कागज़ों पर अँगूठा लगवा दिया। मुँह में कपड़ा ठूँस कर एक कोठरी में बंद कर दिया, जबरदस्ती अँगूठे का निशान लिया गया तथा उन्हें मारा पीटा गया।जमीन नाम न करने पर उनके भाइयों ने भी वही हाल किया जो महंत ने किया था | इस तरह दोनों ही केवल ज़मीन जायदाद के लिए हरिहर काका से व्यवहार रखते थे। इसके लिए दोनों ने ही काका के साथ छल व बल का प्रयोग किया। इसी कारण हरिहर काका को अपने भाई और महंत एक ही श्रेणी के लगने लगे।

प्रश्न :- 3 ठाकुर बाड़ी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है ?

कहा जाता है गाँव के लोग भोले होते हैं। असल में गाँव के लोग अंधविश्वासी धर्मभीरू होते हैं। मंदिर जैसे स्थान को पवित्र, निश्कलंक, ज्ञान का प्रतीक मानते हैं। पुजारी, पुरोहित मंहत जैसे जितने भी धर्म के ठेकेदार हैं उनपर अगाध श्रद्धा रखते हैं। वे चाहे कितने भी पतित, स्वार्थी और नीच हों पर उनका विरोध करने से वे डरते हैं। इसी कारण ठाकुर बाड़ी के प्रति गाँव वालों की अपार श्रद्धा थी। उनका हर सुख-दुख उससे जुड़ा था।

प्रश्न :- 4 अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। वे जानते हैं कि जब तक उनकी जमीन-जायदाद उनके पास है, तब तक सभी उनका आदर करते हैं। ठाकुरबारी के महंत उनको इसलिए समझाते हैं क्योंकि वह उनकी जमीन ठाकुरबारी के नाम करवाना चाहते हैं। उनके भाई उनका आदर-सत्कार जमीन के कारण करते हैं। हरिहर काका ऐसे कई लोगों को जानते हैं, जिन्होंने अपने जीते जी अपनी जमीन किसी और के नाम लिख दी थी। बाद में उनका जीवन नरक बन गया था। वे नहीं चाहते थे कि उनके साथ भी ऐसा हो।

प्रश्न :- 5 हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे। उन्होंने उनके साथ कैसा व्यवहार किया ?

उत्तर :- महंत के संकेत पर ठाकुरबारी के साधु-संत हरिहर काका को उठाकर ले गए थे। रात के समय अकेले दालान में सोते हुए हरिहर काका को ये लोग पीठ पर लाद कर उठा ले गए। इन लोगों ने काका के साथ दुर्व्यवहार किया | मंहत ने अपने चेले साधु- संतों के साथ मिलकर उनके हाथ पैर बांध दिए, मुहँ में कपड़ा ठूँस दिया और जबरदस्ती अँगूठे के निशान लिए, उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया। जब पुलिस आई तो स्वयं गुप्त दरवाज़े से भाग गए।

प्रश्न :- 6 हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

उत्तर : हरिहर काका के मामले में गाँव के लोगों के दो वर्ग बन गए थे। दोनों ही पक्ष के लोगों की अपनी-अपनी राय थी। आधे लोग परिवार वालों के पक्ष में थे। उनका कहना था कि काका की जमीन पर हक तो उनके परिवार वालों का बनता है। काका को अपनी ज़मीन-जायदाद अपने भाइयों के नाम लिख देनी चाहिए, ऐसा न करना अन्याय होगा। दूसरे पक्ष के लोगों का मानना था कि महंत हरिहर की ज़मीन उनको मोक्ष दिलाने के लिए लेना चाहता है। काका को अपनी ज़मीन ठाकुरजी के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उनका नाम या यश भी

फैलेगा और उन्हें सीधे बैकुंठ की प्राप्ति होगी। इस प्रकार जितने मुँह थे उतनी बातें होने लगीं। प्रत्येक का अपना मत था। इन सबको एक कारण था कि हरिहर काका विधुर थे और उनकी अपनी कोई संतान न थी जो उनका उत्तराधिकारी बनता। पंद्रह बीघे जमीन के कारण इन सबका लालच स्वाभाविक था।

प्रश्न :- 7 कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

उत्तर :- जब काका को असलियत पता चली और उन्हें समझ में आ गया कि सब लोग उनकी ज़मीन जायदाद के पीछे हैं तो उन्हें वे सभी लोग याद आ गए जिन्होंने परिवार वालों के मोह माया में आकर अपनी ज़मीन उनके नाम कर दी और मृत्यु तक तिलतिल करके मरते रहे, दाने-दाने को मोहताज़ हो गए। इसलिए उन्होंने सोचा कि इस तरह रहने से तो एक बार मरना अच्छा है। जीते जी ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। ये लोग मुझे एक बार में ही मार दे। अत: लेखक ने कहा कि अज्ञान की स्थिति में मनुष्य मृत्यु से डरता है परन्तु ज्ञान होने पर मृत्यु वरण को तैयार रहता है।

प्रश्न :- 8 समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर :- आज समाज में मानवीय मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। ज़्यादातर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए रिश्ते निभाते हैं, अपनी आवश्यकताओं के हिसाब से मिलते हैं। अमीर रिश्तेदारों का सम्मान करते हैं, उनसे मिलने को आतुर रहते हैं जबकि गरीब रिश्तेदारों से कतराते हैं। केवल स्वार्थ सिद्धि की अहमियत रह गई है। आए दिन हम अखबारों में समाचार पढ़ते हैं कि ज़मीन जाय़दाद, पैसे जेवर के लिए लोग घिनौने से घिनौना कार्य कर जाते हैं (हत्या अपहरण आदि)। इसी प्रकार इस कहानी में भी पुलिस न पहुँचती तो परिवार वाले मंहत जी (काका की) हत्या ही कर देते। उन्हें यह अफसोस रहा कि वे काका को मार नहीं पाए।

प्रश्न :- 9 यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

उत्तर :- यदि हमारे आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो हम उसकी पूरी तरह मदद करने की कोशिश करेंगे। उनसे मिलकर उनके दुख का कारण पता करेंगे, उन्हें अहसास दिलाएँगे कि वे अकेले नहीं हैं। सबसे पहले तो यह विश्वास कराएँगे कि सभी व्यक्ति लालची नहीं होते हैं। इस तरह मौन रह कर दूसरों को मौका न दें बल्कि उल्लास से शेष जीवन बिताएँ। रिश्तेदारों से मिलकर उनके संबंध सुधारने का प्रयत्न करें।

प्रश्न :- 10 हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :- यदि काका के गाँव में मीडिया पहुँच जाती तो सबकी पोल खुल जाती, मंहत व भाइयों का पर्दाफाश हो जाता। अपहरण और जबरन अँगूठा लगवाने के अपराध में उन्हें जेल हो जाती। हरिहर काका का जिस प्रकार से धर्म और घर अर्थात् खून के रिश्तों से विश्वास उठ चुका था, उससे वे मानसिक रूप से बीमार हो गए थे। वे बिलकुल चुप रहते थे। किसी की भी कोई बात का कोई उत्तर नहीं देते थे। वर्तमान दृष्टि से यदि देखा जाए तो आज मीडिया की अहम् भूमिका है। लोगों को सच्चाई से अवगत करना उसका मुख्य कार्य है। यदि हरिहर काका की बात मीडिया तक पहुँच जाती तो शायद स्थिति थोड़ी भिन्न होती। वे अपनी बात लोगों के सामने रख पाते और स्वयं पर हुए अत्याचारों के विषय में लोगों को जागृत करते। हरिहर काका को मीडिया ठीक प्रकार से न्याय दिलवाती। उन्हें स्वतंत्र रूप से जीने की व्यवस्था उपलब्ध करवाने में मदद करती। जिस प्रकार के दबाव में वे जी रहे थे वैसी स्थिति मीडिया की सहायता मिलने के बाद नहीं होती।

पाठ 6 अब कहाँ दूसरों के दुःख से

निदा फाजली

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –

प्रश्न :- 1 अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं ?

उत्तर :- अरब में नूह नाम के एक पैगंबर थे जिनका असली नाम लशकर था। वे अत्यंत दयालु और संवेदनशील थे। एक बार एक कुत्ते को उन्होंने दुत्कार दिया। उस कुत्ते का जवाब सुनकर वे बहुत दुखी हुए और उम्र भर पश्चाताप करते रहे। अपने करुणा भाव के कारण ही वे 'नूह' के नाम से याद किए जाते हैं।

प्रश्न :- 2 लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?

उत्तर :- लेखक की माँ पशु-पक्षियों के प्रति ही नहीं पेड़-पौधों के प्रति भी संवेदनशील थीं। वे सूरज छिपने के बाद पेड़ों के पत्ते तोड़ने से मना करती थीं। उनका मानना था कि ऐसा करने पर पेड़ों को दुख होगा और वे रोते हुए बद्दुआ देते हैं।

प्रश्न :- 3 प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ ?

प्रकृति में आए असंतुलन का दुष्परिणाम बहुत ही भयंकर हुआ; जैसे-

- विनाशकारी समुद्री तूफ़ाने आने लगे।
- अत्यधिक गरमी पड़ने लगी।
- असमय बरसातें होने से जन-धन और फ़सलें क्षतिग्रस्त होने लगीं।
- आधियाँ और तूफ़ान आने लगीं।
- नए-नए रोग उत्पन्न हो गए, जिससे पशु-पक्षी असमय मरने लगे।

प्रश्न :- 4 लेखक की माँ ने पूरे दिन रोज़ा क्यों रखा ?

उत्तर :- लेखक के घर एक कबूतर का घोसला था जिसमें दो अंडे थे। एक अंडा बिल्ली ने झपट कर तोड़ दिया, दूसरा अंडा बचाने के लिए माँ उतारने लगीं तो टूट गया। इस पर उन्हें दुख हुआ। माँ ने प्रायश्चित के लिए पूरे दिन रोज़ा रखा और नमाज़ पढ़कर माफी माँगती रहीं।

प्रश्न :- 5 लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया?

उत्तर :- लेखक ने ग्वालियर से मुंबई तक अनेक बदलाव देखे-

- उसके देखते-देखते बहुत सारे पेड़ कट गए।
- नई-नई बस्तियाँ बस गईं।

- चौड़ी सड़कें बन गईं।
- पशु-पक्षी शहर छोड़कर भाग गए। जो बच गए उन्होंने जैसे-तैसे यहाँ-वहाँ घोंसला बना लिया।

'प्रश्न :- 6 डेरा डालने' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-'डेरा डालने' का अर्थ है कुछ समय के लिए रहना अर्थात अस्थाई निवास । बड़ी-बड़ी इमारते बनने के कारण पक्षियों को घोंसले बनाने की जगह नहीं मिल रही है। वे इमारतों में ही डेरा डालने लगे हैं।

प्रश्न :- 7 शेख अयाज़ के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर :- एक बार शेख अयाज़ के पिता कुएँ पर नहाने गए और वापस आए तो उनकी बाजू पर काला च्योंटा चढ़ कर आ गया। जैसे ही वह भोजन करने बैठे च्योंटा बाजू पर आया तो वे एक दम उठ कर चल दिए माँ ने पूछा कि क्या खाना अच्छा नहीं लगा तो उन्होनें जवाब दिया कि मैंने किसी को बेघर कर दिया है। उसे घर छोड़ने जा रहा हूँ । अर्थात वे च्योंटे को कुएँ पर छोड़ने चल दिए।

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

प्रश्न :- 8 बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :- बढ़ती हुई आबादी ने पर्यावरण पर अत्यंत विपरीत प्रभाव डाला। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ी त्यों-त्यों मनुष्य की आवास और भोजन की जरूरत बढ़ती गई। इसके लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की गई ताकि लोगों के लिए घर बनाया जा सके। इसके अलावा सागर के किनारे अतिक्रमण कर नई बस्तियाँ बसाई गईं । इन दोनों ही कार्यों से पर्यावरण असंतुलित हुआ। इससे असमय वर्षा, बाढ़, चक्रवात, भूकंप, सूखा, अत्यधिक गरमी एवं आँधी-तूफ़ान के अलावा तरह-तरह के नए-नए रोग फैलने लगे। इस प्रकार बढ़ती आबादी ने पर्यावरण में जहर भर दिया।

प्रश्न :- 9 लेखक की पत्नी को खिड़की मे जाली क्यों लगवानी पड़ी?

उत्तर :- पक्षियों का प्राकृतिक आवास नष्ट होने से पक्षी यहाँ-वहाँ शरण लेने को विवश हुआ। लेखक के फ्लैट के रोशनदान में दो कबूतरों ने अपना डेरा जमा लिया और उसमें अंडे दे दिए उन अंडों से बच्चे निकल आए थे। छोटे बच्चों की देखभाल के लिए कबूतर वहाँ बार-बार आया-जाया करते थे। इस आवाजाही में कई वस्तुएँ गिरकर टूट जाती थीं। इसके अलावा वे लेखक की पुस्तकें और अन्य वस्तुएँ गंदी कर देते थे। कबूतरों से होने वाली परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली लगवानी पड़ी।

प्रश्न :- 10 समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?

उत्तर :- कई सालों से बिल्डर समुद्र को पीछे धकेल रहे थे और उसकी ज़मीन हथिया रहे थे। समुद्र सिमटता जा रहा था। उसने पहले टाँगें समेटी फिर उकड़ू बैठा फिर खड़ा हो गया। फिर भी जगह कम पड़ने लगी तो वह गुस्सा हो गया। उसने अपने सीने पर दौड़ती तीन जहाजों को बच्चों की गेंद की भाँति उठाकर फेंक दिया | एक वार्ली के समुद्र के किनारे, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ इंडिया पर टूट फूट गया | ये जहाज़ पहले जैसे चलने योग्य न बन सके।इस प्रकार समुद्र ने अपना गुस्सा निकाला |